मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन
(पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग म.प्र.)
(4)

समूह की एक जुटता से श्रीमती गीता बनी जिला पंचायत सदस्य
(समूह से राजनैतिक सशक्तीकरण)

बिन्दिया स्व–सहायता समूह से जिला पंचायत सदस्यः–

शहडोल जिले के जिला पंचायत के वार्ड नंबर 14 में 4981 मत हासिल करते हुए 481 वोटों से विजयी हुई श्रीमती गीता कोल जिला पंचायत सदस्य बनीं थीं।

बिन्दिया स्व–सहायता समूह ग्राम जुगवारी की ताकत ने अब ये दिखा दिया कि स्व–सहायता समूहों की शक्ति साहूकारों, गरीबी से लड़ती हुई निर्णय की प्रक्रिया में भागीदारी करने वाले मंचों तक जा पहुंची।

समूह संगठन की शक्तिः–

श्रीमती गीता कोल ग्राम जुगवारी के बिन्दिया स्व–सहायता समूह की सदस्य हैं और म.प्र. राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन अंतर्गत गठित नारी उदय ग्राम संगठन की अध्यक्ष हैं। इस संगठन में 14 समूह शामिल हैं, जिसमें ज्यादातर अनुसूचित जनजाति, लघु और सीमान्त कृषक परिवार की महिला सदस्यों को जोड़ा गया है।

जिला पंचायत सदस्य का नामाकंनः–

श्रीमती गीता कोल ने बताया कि आचार संहित लागू होते ही उनके संगठन की रानी कोल, धनमतिया कोल और नर्बदिया यादव ने संगठन की बैठक में सुझाव रखा कि इस बार के चुनावों में स्व–सहायता समूह के सदस्य एकजुट होकर अपना प्रत्यासी खड़ा करेंगे और जिला पंचायत सदस्य के पद पर गीता कोल को सर्वसम्मति से नामांकन दाखिल करने के लिए चुना गया।

महिला समूहों की मदद से चुनाव कैम्पेनः–

नामांकन के बाद महिला समूह पदयात्रा करते हुए प्रत्येक दरवाजे पर गीता कोल के समर्थन में दस्तक देने लगे परन्तु समस्या थी कि वार्ड में कुछ ऐसे गांव भी थे, जिनकी दूरी अधिक थी और पैदल नहीं जाया जा सकता था, महिला समूहों ने संगठित होकर आपस में चंदा करना शुरू कर दिया। 7000 रूपया चंदा के रूप में एकत्रित हुआ और ये महिलायें चन्दे की इस राशि से किराये का चार पहिया वाहन लेकर उसमें सवार होकर वार्ड के अन्य ग्रामों में पहुंचीं और उन्होंने गीता कोल के समर्थन में चुनाव प्रचार किया।

समूह सदस्यों के इस अभियान में जुगवारी, केलमनिया और बंधवा के महिला समूहों ने एकजुटता दिखाई और गीता की जीत का परचम लहरा गया।

समूह से जुड़ावः–

पांचवी कक्षा तक शिक्षित गीता कोल के पिता का निधन बचपन में हो गया था। उनकी मां ने मजदूरी करके अपनी तीन बेटियों का लालन–पालन किया। संघर्ष की इस लड़ाई में गीता ने विवाह के पश्चात स्व–सहायता समूह की सदस्यता ग्रहण की और उन्होंने समूह में प्रति माह 100 रूपया बचाना प्रारंभ किया।

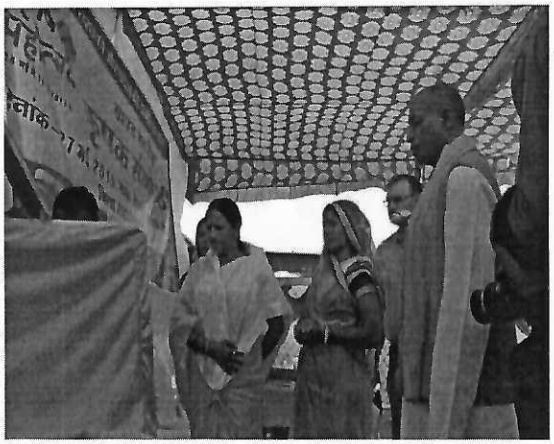

श्रीमती गीता कोल के समूह को आजीविका मिशन की ओर से चक्रिय निधि (रिवाल्विंग) फण्ड और सीआईएफ की राशि भी जारी की गई। बैंक ने भी समूह की मदद में अपना हाथ आगे बढ़ाया। गीता ने समूह से 6000 रूपये लेकर अपने पति की मदद से ईंट भट्टे का काम प्रारंभ किया और इस आमदनी से अपना घर बनाया। उन्होंने उन्नत खेती, श्री विधि और कम लागत कृषि तकनीकी का सबक आजीविका मिशन के प्रशिक्षणों में सीखा और उसे अपनाकर अपनी 1.25 एकड़ खेती को उन्नत खेती के रूप में विकसित किया।

श्रीमती गीता कोल का सपनाः–

आज श्रीमती गीता कोल का सपना है कि वे अपनी तरह जरूरतमंद महिलाओं के सहयोग के लिए आगे आ सकें। जिला पंचायत सदस्य के रूप में जिला पंचायत की बैठकों में वे अपने वार्ड की सिंचाई की समस्या, सड़क की समस्या, स्वास्थ्य सुविधाओं की समस्या को पुरजोर तरीके उठा सकीं।

समूह नहीं छोड़ूंगीः–

श्रीमती गीता कौल ने राजनीति में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। वे अभी भी समूह से जुड़ी रहना चाहती हैं। उनका कहना है कि समूह तो हमारे माता पिता हैं। उसे कैसे छोड सकती हैं। जीवन में आये परिवर्तन मान सम्मान सेवा अवसर केवल और केवल समूहों की वजह से ही मिला है गीता अपने क्षेत्र में रियल हीरो के रूप में पहचान बनाते हुये लोगों की प्रेरणा स्त्रोत बन गई हैं इसी की गोद में खेलकर वे माननीय महोदया कहलाने की पात्रता अर्जित कर सकी हैं।